अंतरिक्षरी
कहानी माला
43-44
तेरे रास्ते में गड्ढा

तेरे रास्ते में गड्ढा

[नोट : कहानी के यह हिस्से "दास्ताने नसरुद्दीन" नामक पुस्तक से लिये गये हैं :
लेखक : लियोनिद सोलोवयेव; अनुवादक : कृष्णकुमार]

शहर के दूसरे सिरे पर पहुंचकर खोजा नसरुद्दीन रुक गया। अपने गधे को एक चायखाने के मालिक के सुपुर्द किया और फौरन एक नानबाई की दूकान में घुस गया।

वहां बड़ी भीड़ थी। धुआं था। खाना पकने की महक भरी थी। चूल्हे गर्म थे और कमर तक नंगे बाबर्चियों की पसीने से तर पीठों पर चूल्हों की लपटों की चमक पड़ रही थी। वे चीखते-चिल्लाते, शोर-शराबा करते, एक-दूसरे को धक्के देते, अपना काम कर रहे थे।

बड़ी मुश्किल से नसरुद्दीन ने अपने लिए जगह तलाश की। दब-पिसकर जिस जगह वह बैठा, वह इतनी तंग थी कि जिन लोगों

की पीठ को धक्का देकर वह बैठा या वे जोर से गुर्रा उठे। पर किसी ने बुरा नहीं माना; किसी ने उससे कुछ कहा नहीं। न वह खुद ही बुड़बुड़ाया। बाजारों में नानबाइयों की दूकानों की भारी भीड़-भाड़। झगड़े का शोरगुल। हँसी-मजाक। धक्कम-धक्का और चीख पुकार। सैकड़ों लोगों का, जो दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद खाने छांटने की फुरसत भी नहीं पाते थे और जिनके मजबूत जबड़े कड़ा और मुलायम हर तरह का गोश्त, हर चीज, चबा जाते थे और जिनके मजबूत मेदे हर चीज हज्म कर लेते थे—बशर्ते कि ये चीजें सस्ती और खूब हों। उनका जोर से नाक साफ करना, खाना चबाना और जुदान चटखारना—यह सब खोजा नसरुद्दीन को हमेशा से पसन्द था।

खोजा नसरुद्दीन एक बार में ही ढ़ेर-सा खाना खा सकता था। एक बार में उसने तीन प्याले कीमा, तीन रकाबी चावल और दो

दरजन समौसे डकार लिये। समोसे खत्म करने में कुछ कोशिश जरूर करनी पड़ी, पर अपने इस उसूल के मुताबिक कि जिसकी कीमत अदा कर दी जाय, वह खाना थाली में नहीं छोड़ना चाहिए, उसने उन समोसों को भी खत्म कर ही डाला।

खाना खत्मकर वह दरवाजे की तरफ बढ़ा और जब कुहनियों से धक्कम-धक्का करने के बाद, आखिर खुली हवा में पहुंचा, तो वह पसीने से नहा रहा था। हाथ-पैरों में कमजोरी भर रही थी, जैसे वे हल्के पड़ गये हों और उनमें ताकत न रही हो—मानो किसी तगड़े आदमी ने हमाम में उसका बदन रगड़ा हो। खाने और गरमी की वजह से तबियत में भारीपन लिये पैर घसीटता हुआ वह उस चायखाने तक पहुंचा जहां अपना गधा छोड़ आया था। उसने चाय मंगायी और गद्दों पर आराम से पसर गया। उसकी पलकें झुकने लगीं और खुशगवार

खयाल उसके दिमाग में धीमे-धीमे तैरने लगे।

"मेरे पास इस वक्त अच्छी-खासी रकम है। किसी कारखाने में जीन-साजी या बरतन बनाने के काम में इसे लगा देना अच्छा रहेगा। मैं इन दोनों कामों को जानता हूं। घुमक्कड़ी छोड़ने का वक्त अब आ गया है। क्या मैं और लोगों से बदतर हूं? क्या मैं उनसे ज्यादा बेवकूफ हूं? क्या मैं भी खूबसूरत और मेहरबान बीवी नहीं हासिल कर सकता? क्या मेरे भी एक बेटा नहीं हो सकता जिसे मैं अपनी गोद में खिला सकूं? पैगम्बर की कसम, वह नन्हा, शोर मचानेवाला बच्चा, बड़ा होकर मशहूर शैतान निकलेगा, और मैं अपनी सारी दानिशमन्दी व तजरबे से हासिल अक्लमन्दी उसमें उड़ेल दूंगा। हां, मेरा इरादा पक्का हो गया है। अब मैं बेचैन आवारगर्दी की जिन्दगी छोड़ूंगा। काम शुरू करने के लिए मुझे जीनसाज या कुम्हार की दूकान खरीद लेनी

चाहिए..."

उसने हिसाब लगाना शुरू किया :"अच्छी दूकान की कीमत कम-से-कम तीन सौ टके होगी और इस वक्त मेरे पास हैं कुल डेढ़ सौ टके।" चेचकरू नौकर को उसने कोसना शुरू कर दिया :"अल्लाह उस डाकू को अंधा कर दे। वह मुझसे वही रकम छीन ले गया है जिसकी किसी काम को शुरू करने के लिए मुझे जरूरत थी।

एक बार फिर किस्मत ने साथ दिया। "बीस टके!" किसी ने यकायक आवाज लगायी। फिर तांबे की बाली में पांसा गिरने की आवाज सुनायी दी।

बरसाती के किनारे, जानवर बांधने के खूटों के बिलकुल पास, कुछ लोग घेरा बनाये बैठे थे। चायखाने का मालिक उनके पीछे खड़ा था। गरदन उठाये वह उनके सिरों के ऊपर से झांक रहा था।

"जुआ !" कोड़नी के सहारे उठते हुए खोजा नसरुद्दीन ने भांप लिया। "उनके जुआ खेलने की बात उतनी ही सच है जितनी यह कि मेरा नाम खोजा नसरुद्दीन है। मैं भी क्यों न देखूं; भले ही दूर से देखूं। जुआ तो नहीं खेलूंगा मैं। ऐसा बेवकूफ नहीं। पर कोई अक्लमन्द आदमी बेवकूफों को देखे क्यों नहीं?"

वह उठकर जुआरियों के पास चला गया।

"बेवकूफ लोग," चायखाने के मालिक के कान में वह फुसफुसाया, "मुनाफे के लालच में अपना आखिरी सिक्का भी गवां देते हैं। क्या पैगम्बर ने रुपये के लिए जुआ खेलने को मना नहीं किया है? अल्लाह का शुक्र है कि यह खतरनाक आदत मुझ में नहीं है ! पर उस लाल बालोंवाले जुआरी की तकदीर तो देखो ! लगातार चौथी बार जीता है ! देखो, देखो ! अरे, वह तो पांचवीं बार भी जीत गया ! ओ बेदिमाग

बेवकूफ! उसे तो दौलत का झूठा सपना जुए की ओर खींच रहा है, हालांकि गरीबी ने उसके रास्ते में गढ़ा खोद रखा है। क्या ? फिर छठी बार जीत गया? नहीं देखी, ऐसी किस्मत मैंने कभी नहीं देखी। देखो, देखो वह फिर दांव लगा रहा है। वाकई, इन्सान की बेवकूफी की इन्तिहा नहीं। ऐसा तो नामुमकिन है कि लगातार जीतता ही जाय! झूठी किस्मत में यकीन करनेवाले लोग ऐसे ही बरबाद होते हैं ! इस लाल दालों वाले आदमी को सबक सिखाना चाहिए। अगर वह सातवीं बार फिर जीता तो मैं उससे दांव बदूंगा,—गचें दिल से मैं जुए के खिलाफ ही हूं। काश मैं अमीर होता, तो जुआ न जाने कब का बन्द करवा चुका होता।"

लाल बालोंवाले ने फिर पांसा फेंका और सातवीं बार फिर जीता।

अब खोजा नसरुद्दीन पक्के इरादे से आगे बढ़ा। कन्धों से खिलाड़ियों

को अलग हटाते हुए वह घेरे में जा बैठा।

खुशकिस्मत जीतनेवाले पक्के इरादे से आगे बढ़ा। कन्धों से खिलाड़ियों को अलग हटाते हुए वह घेरे में जा बैठा।

लाल बालोंवाले ने भर्राये गले से पूछा : "कितनी रकम?" उसका सारा बदन कांप गया। जल्दी ही खत्म होनेवाली खुशकिस्मती में ज्यादा से ज्यादा जीत लेने के लिए वह उतावला हो रहा था।

खोजा नसरुद्दीन ने अपना बटुआ निकाला। जरूरत के लिए पच्चीस टके उसमें वापस रख दिये और बाकी निकाल लिये। तांबे के थाल में चांदी के सिक्के खनकनाकर गिरे और चमकने लगे। जुआरियों ने ऊंचा दांव लगाने वाले इस इन्सान का खुसफुसाहट के साथ इस्तकबाल किया। ऊंचे दांवों का खेल शुरू हो गया था।

लाल बालोंवाले ने पांसे उठा लिये और बड़ी देर तक उन्हें

खनखनाता रहा, मानों फेंकने में झिझक रहा हो। हर कोई सांस रोके देख रहा था—यहां तक कि गधे ने भी मुंह उठा लिया था और कान खड़े कर लिये थे। अब सिर्फ जुआरी की मुट्ठी से पांसों के खनखनाने की आवाज आ रही थी। उस रूखी खनखनाहट से खोजा नसरुद्दीन के पेट और बदन में चाहत भरी कमजोरी आ गयी। आखिर लाल बालोंवाले ने पांसे फेंके। दूसरे खिलाड़ी गरदन बढ़ाकर देखने लगे और एक साथ ही ठीक से पीछे की ओर लुढ़क कर बैठ गये। एक साथ ही उन्होंने लम्बी सांसें लीं—मानो ये सब सांसें एक ही सोने से निकली हों। जुआरी पीला पड़ गया। उसके भिंचे हुए दांतों से कराह निकल गयी। पांसे पर तीन दिखायी दिये। वह जरूर हार रहा था, क्योंकि एक उतना ही कम निकलता है जितना कि छः और कोई भी दूसरा पांसा खोजा नसरुद्दीन के माफिक होगा।

मुट्ठी में पांसे हिलाते हुए उसने तकदीर का शुक्रिया अदा किया कि आज वह उस पर मेहरवान थी। पर वह भूल गया था कि तकदीर ढुलमुल और सनकी होती है और उन लोगों को बड़ी आसानी से दगा दे जाती है जो उस पर भरोसा करते हैं। अपने पर इतना भरोसा करने के लिए, अब उसने खोजा नसरुद्दीन को सबक सिखाने की सोची। इसके लिए उसने चुना उसके गधे, या कहो गधे की दुम को, जिसके आखीर में कांटे और कटाव थे। गधा जुआरियों की ओर पलटा और जो उसने दुम घुमायी तो जाकर सीधी उसके मालिक के हाथ से टकरायी। पांसे हाथ से फिसल गये। लाल बालोंवाला जुआरी खुशी से भर्रायी चीख के साथ फौरन थाल पर लेट गया और दांव पर लगी रकम अपने बदन से ढक ली।

खोजा नसरुद्दीन ने दो काने फेंके थे।

देर तक होंठ चबाता हुआ वह चुपचाप बैठा रहा। फटी-फटी आंखों के सामने दुनिया तैरती और ढहती-सी नजर आ रही थी। कानों में एक अजब सनसनाहट हो रही थी।

एकाएक वह उछला, एक डंडा उठा लिया और खूंटे के पास खदेड़ते हुए गधे को पीटने में जुट पड़ा।

"कम्बख्त ! गधे ! हरामजादे ! बदबूदार ! सभी जिन्दा जानवरों के लिए लानत !" खोजा नसरुद्दीन चिल्ला रहा था। "क्या यही काफी नहीं था कि अपने मालिक के पैसे से जुआ खेले ? क्या यह पैसा हारना भी जरूरी था ? तेरी बदमाश खाल खींच ली जाय ! तेरे रास्ते में अल्लाह गड्ढा कर दे, ताकि तू गिरे और तेरे पैर टूट जायें ! तू मरेगा कब कि मुझे तेरा बदनुमा चेहरा देखने से छुट्टी मिले!"

गधा रेंका। जुआरी हंसी से खिलखिला उठे और चिल्लाने लगे।

सबसे ज्यादा जोर से चिल्लाया लाल बालोंवाला वह जुआरी, जिसे अपनी खुदकिस्मती पर पक्का यकीन हो आया था।

थके और हांफते हुए खोजा नसरुद्दीन ने जब डंडा फेंक दिया तो लाल बालोंवाला बोला : "आओ, फिर खेल लो। दो-चार दांव और लग जायें। तुम्हारे पास अभी पच्चीस तंके तो हैं ही।"

यह कहकर उसने अपना बायां पैर फैला दिया और खोजा नसरुद्दीन के लिए हिकारत दिखाते हुए उसे थोड़ा हिलाया।

"हां, क्यों नहीं !" खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया। वह सोच रहा था—जब सवा सौ टके चले गये तो अब बाकी पच्चीस का क्या होगा, यह सोचना ही फजूल है।

लापरवाही से उसने पांसे फेंके। वह जीत गया।

हारी हुई रकम थाल पर फेंकते हुए लाल बालोंवाले ने कहा—"पूरी

रकम।"

खोजा नसरुद्दीन फिर जीत गया।

लाल बालोंवाले को यकीन नहीं आ रहा था कि किस्मत पलट गयी है।

"पूरी रकम।" उसने फिर कहा।

सात बार लगातार उसने यही कहा और हर बार वह हारा।

थाल रुपयों से भर चुका था। जुआरी खामोश बैठे थे। सिर्फ उनकी आंखों की चमक से उस आग का पता लग रहा था, जो उनके भीतर सुलग रही थी और उन्हें जलाये डाल रही थी।

लाल बालोंवाला चिल्लाया :"अगर शैतान ही तुम्हारी मदद कर रहा है तो दूसरी बात है, वर्ना तुम हर बार नहीं जीत सकते। कभी तो तुम हारोगे ही। यहां थाल पर तुम्हारे सोलह सौ टके हैं। लगाओगे एक

बार फिर पूरी रकम? कल मैं अपनी दूकान के लिए इस रकम से माल खरीदने वाला था। लो तुम्हारी रकम के मुकाबले मैं इसे भी दांव पर लगाता हूं!"

सोने के सिक्कों—तिल्ले रुपयों और तूमानों—से भरी एक छोटी सी थैली उसने निकाली।

उतावली भरी आवाज में खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया—"अपना सोना इस थाल में उड़ेल!"

इस चायखाने में ऐसे भारी दांव कभी नहीं देखे गये थे। मालिक उबलती हुई केतलियों को भूल गया। जुआरियों की सांसें लम्बी चलने लगीं। लाल बालोंवाले ने पांसे फेंके और आंखें बन्द कर लीं। पांसे देखने में उसे डर लग रहा था।

"ग्यारह!"—सब एक साथ चिल्ला उठे। खोजा नसरुद्दीन अपने

को करीब-करीब हारा हुआ समझने लगा। अब सिर्फ दो छक्के, यानी बारह काने, ही उसे बचा सकते थे।

अपनी खुशी को छिपाये बिना लाल बालोंवाला जुआरी भी दोहराने लगा :"ग्यारह ! ग्यारह काने ! देखो भई, मेरे ग्यारह हैं ! हार गये तुम! हार गये ! हार गये !"

खोजा नसरुद्दीन का सारा बदन जैसे ठंडा पड़ गया हो। उसने पांसे उठाये और उन्हें फेंकने की तैयारी करने लगा। फिर यकायक उसने अपना हाथ रोक लिया।

"इधर पलट!" वह अपने गधे से बोला। "तू तीन काने पर हार गया था। ले, अब ग्यारह काने पर जीतने की कोशिश कर, नहीं तो मैं तुझे फौरन कसाई के यहां ले चलूंगा।"

बायें हाथ से गधे की दुम पकड़कर पांसे लिए हुए ही उसने

दाहिने हाथ से गधे को ठोंका।

लोगों की जोर की आवाजों से चायखाना हिल गया। मालिक कलेजा थामकर बैठ गया। यह तनाव उसकी बरदाश्त के बाहर था।

... ये लो ... एक ... दो ...

पांसों पर दो छक्के थे।

लाल बालोंवाले जुआरी की आंखें मानो बाहर निकल पड़ीं। उसके सूखे सफेद चेहरे पर कांच-सी जड़ी रह गयी। धीरे से वह उठा और रोता, डगमगाता हुआ, चला गया : "हाय री किस्मत ! हाय कम्बख्ती!"

कहते हैं कि उस दिन के बाद लाल बालोंवाला फिर कभी शहर में नहीं दिखायी दिया। भागकर वह रेगिस्तान चला गया और वहां बाल बढ़ाये हुए और देखने में बदनुमा वह रेत और कंटीली झाड़ियों के बीच

लगातार चिल्लाता रहता—"हाय कम्बख्ती ! हाय री किस्मत !" आखिर सियारों ने उसका काम तमाम कर दिया। किसी ने उसके लिए अफसोस नहीं किया, क्योंकि वह बहुत बेरहम था और इंसाफ की बात तक नहीं करता था। सीधे-सादे और आसानी से यकीन कर लेनेवाले लोगों को उसने बहुत नुकसान पहुंचाया था।

रही खोजा नसरुद्दीन की बात, सो उसने जीती हुई दौलत को जीन से लगे थैलों में भरा, गधे को गले लगाया, उसका मुंह चूमा और उसी वक्त पकाए बढ़िया मालपुए उसे खिलाये। उस होशियार जानवर को भी अचम्भा था। अभी चन्द मिनट पहले ही उसके साथ बिलकुल दूसरा सलूक हुआ था।

तभी उधर से सूदखोर जाफर गुजरा। उसका थैला सोने-चाँदी के छोटे-मोटे जेवरों से फूल रहा था। ये जबर उसने सर्राफ टोले से

गुलजान के लिए खरीदे थे।

हालांकि एक घंटे का दिया हुआ वक्त खत्म हो रहा था और सूदखोर हवस की बेताबी में जल्दी-जल्दी चल रहा था, तो भी रास्ते में खोजा नसरुद्दीन की नीलाम की आवाज सुनते ही लालच ने उसे धर दबाया।

सूदखोर को देखते ही भीड़ जल्दी से हट गयी क्योंकि हर तीसरा आदमी उसका कर्जदार था।

जाफर ने खोजा नसरुद्दीन को पहचान लिया। "तो तुम्हीं हो, जिसने कल मुझे पानी से निकाला था? तुम यहां तिजारत कर रहे हो? यह इतना माल तुम्हें कहां से मिल गया?"

खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया।

"हजरत जाफर ! क्या आपको याद नहीं कि कल आपने मुझे

आधा टका दिया था। उसी से मैंने तिजारत की और तकदीर ने मेरा साथ दिया।"

सूदखोर बोला :"और तुमने सबेरे ही सबेरे इतना माल इकट्ठा कर लिया ? मेरे सिक्के के सचमुच बहुत फायदा हुआ। इस ढेर का क्या लोगे?"

"छः सौ टके।"

"पागल हो गये हो क्या ? जिसने तुम्हारा भला किया उससे इतनी रकम मांगने में तुम्हें शर्म आनी चाहिए। क्या तुम्हारी यह दौलतमन्दी मेरी ही वजह से नहीं है ? दो सौ टके...मैं तो यही दाम लगा सकता हूं।"

"पाँच सौ टके !" खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया ! "मैं आपकी इज्जत करता हूं जाफर साहब ! आप पांच सौ टके ही दे दें।"

"अरे नाशुक्रे ! अहसान फरामोश ! मैं एक बार फिर कहता हूं, क्या तेरी दौलतमन्दी मेरी वजह से ही नहीं है ?"

खोजा नसरुद्दीन अब सब्र न कर सका। बोला : "अबे सूदखोर! क्या तू मेरी ही वजह से जिन्दा नहीं है ? यह सच है कि तेरी जान बचाने के बदले तूने मुझे आधा टका दिया था, पर चूंकि तेरी जिन्दगी की कीमत भी इससे ज्यादा नहीं है, इसलिए मैंने बुरा नहीं माना। अगर तुझे यह माल खरीदना है तो ठीक से दाम लगा।"

"तीन सौ !"

खोजा नसरुद्दीन चुप रहा।

सूदखोर तजरबेकार आंखों से माल की कीमत जांचने लगा। और जब उसे तसल्ली हो गयी कि ये सब कुलाह, जूते, खलअतें कम से कम सात और टकों में बिक जायेंगे, तभी उसने दाम बढ़ाना तय

किया।

"साढ़े तीन सौ।"

"चार सौ।"

"पौने चार सौ।"

"चार सौ।"

खोजा नसरुद्दीन अड़ा रहा। कई बार सूदखोर ऐसे आगे बढ़ लिया मानो अब वह आगे दाम न बढ़ायेगा। फिर लौट-लौटकर एक-एक टका करके उसने दाम बढ़ाये और आखिर वह राजी हो गया। सौदा पट गया। कांखते-कूंखते और शिकायत करते हुए उसने चार सौ टके गिने। "अल्लाह की कसम ! इस माल की दूगनी कीमत दे रहा हूं ! पर मेरी खसलत ही यह है कि रहमदिली की वजह से मैं भारी नुकसान उठाता हूं।"

एक सिक्का लौटाते हुए खोजा नसरुद्दीन ने कहा : "यह सिक्का खोटा है और ये पूरे चार सौ टके नहीं हैं। ये तो कुल तीन सौ अस्सी हैं। तुम्हारी नजर कमजोर होती जा रही है, जाफर साहब !"

सूदखोर खोटा सिक्का बदलने और बीस टके और देने को मजबूर हो गया। यह हो चुका तो उसने चौथाई टके पर एक मजदूर लिया और माल उस पर लादकर अपने पीछे-पीछे आने को कहा। बेचारा मजदूर माल के बोझ से करीब-करीब दब-सा गया।

खोजा नसरुद्दीन ने कहा : "हम आप एक ही तरफ तो जा रहे हैं।"

वह गुलजान को देखने के लिए बेताब हो रहा था और जल्दी-जल्दी आगे बढ़ रहा था। अपने लंगड़ेपन से मजबूर सूदखोर पीछे-पीछे चल रहा था।

"तुम इतनी जल्दी में कहां जा रहे हो?" आस्तीन से पसीना पोंछते हुए सूदखोर ने पूछा।

अपनी काली आंखों में शरारत-भरी चमक लाकर खोजा नसरुद्दीन बोला : "उसी जगह, जहां आप जा रहे हैं। हम और आप, जाफर साहब, एक ही जगह और एक ही काम से जा रहे हैं।"

सूदखोर ने कहा : "पर तुम्हें मेरे काम की क्या खबर ? अगर तुम समझ पाते तो तुम्हें रश्क होने लगता।"

इस बात के मानी खोजा नसरुद्दीन से छिपे नहीं रहे और खुशी से हंसता हुआ वह बोला : "ऐ सूदखोर ! अगर तुम्हें मेरे काम की खबर होती तो तुम मुझ से दस गुना ज्यादा रश्क करने लगते।"

जबाब की गुस्तखी समझकर जाफर ने नाराजी से भवें तानी : "तू बहुत जुबान चलाता है। तेरे जैसों को तो मेरे जैसों से बात करते

वक्त डर से कांपना चाहिए। बुखारा में ऐसे कुछ ही लोग हैं जो मुझसे बड़े हैं और जिनसे मैं हसद करता हूं। मैं रईस हूं और मेरी मनचाही बात होने में कोई रुकावट नहीं पड़ती। मैंने बुखारा की सबसे हसीन लड़की चाही थी और आज वह मेरी हो जायगी।"

उसी वक्त एक डलिया में चेरी के फल बेचता हुआ एक शख्स उधर से गुजरा। खोजा नसरुद्दीन ने उसकी डलिया में से लम्बे डंठलवाली एक चेरी निकाल ली और सूदखोर को दिखाता हुआ बोला:

"जाफर साहब ! मेरी बात पूरी सुन लीजिए। लोग कहते हैं कि एक दिन एक सियार ने दरख्त में बहुत ऊंचे एक चेरी देखी। उसने अपने मन में सोचा : "मैं तब तक चैन न लूंगा जब तक वह चेरी मुझे न मिल जाय।' और वह पेड़ पर चढ़ने लगा। टहनियों से बुरी तरह

छिलता हुआ वह दो घंटे तक चढ़ता रहा। जब वह चेरी के पास पहुंचा और अपना मुंह फाड़कर उसे खाने की तैयारी कर रहा था तभी यकायक एक बाज झपटा और चेरी लेकर उड़ गया। इसके बाद सियार फिर दो घंटे तक पेड़ से उतरता रहा और उतरने में और भी ज्यादा छिल गया। वह बुरी तरह रो-रोकर कहता रहा : 'मैं वह चेरी लेने के लिए दख्त पर चढ़ा ही क्यों ! यह तो सभी जानते हैं कि दख्तों पर चेरी सियारों के लिए नहीं उगा करती।"

सूदखोर ने नफरत से कहा : "तू बेवकूफ है। इस किस्से में मुझे तो कोई मतलब की बात दिखायी नहीं देती।"

खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया : "गहरे मतलब फौरन नहीं दिखायी देते।"

चेरी का डंठल उसके कुलाह में दवा था और चेरी उसके कान के

पीछे लटक रही थी।

सड़क मुड़ी। मोड़ के सामने कुम्हार अपनी बेटी के साथ एक पत्थर पर बैठा था।

कुम्हार उठ खड़ा हुआ। उसकी आंखें, जिनमें उम्मीद की कुछ चमक अब तक बाकी थी, बुझ सी गयीं, क्योंकि उसे लगा कि अजनबी रुपया इकट्ठा करने में नाकामयाब रहा है। गुलजान ने एक आह भरी और अपना मुंह फेर लिया। वह ऐसी दर्द-भरी आवाज में बोली कि उसे सुनकर पत्थर के भी आंसू आ जाते : "अब्बा ! हम बरबाद हो गये।" लेकिन सूदखोर का दिल पत्थर से भी सख्त था। उसके चेहरे पर बेरहम जीत और हवस दिखायी दे रही थी। वह बोला:

"कुम्हार ! मियाद खत्म हुई। अब तुम मेरे गुलाम हो और तुम्हारी बेटी मेरी गुलाम और रखैल है।"

खोजा नसरुद्दीन को चोट पहुंचाने और जलील करने के लिए उसने मालिकाना ढंग से गुलजान का चेहरा बेनकाब कर दिया। 'देखो, यह हसीन है न ? आज मैं इसके साथ सोऊंगा। अब मुझे बताओ कि किसे किससे हसद करनी चाहिए ?"

खोजा नसरुद्दीन बोला : "वाकई यह लड़की खूबसूरत है। लेकिन क्या तुम्हारे पास कुम्हार की रसीद है ?"

"बेशक ! रसीद के बिना कोई शख्स काम कर ही कैसे सकता है? सभी लोग तो चोर और धोखेबाज हैं। यह रही रसीद, जिस पर कर्ज की रकम और उसे अदा करने की तरीख दर्ज है। कुम्हार ने नीचे अंगूठे का निशान लगा दिया है।"

उसने रसीद खोजा नसरुद्दीन को दिखायी। खोजा नसरुद्दीन ने कहा: "हां, रसीद तो ठीक है। अब रसीद के मुताबिक अपनी रकम

लो। उधर से गुजरनेवाले कुछ लोगों को बुलाकर उसने कहा, "जरा ठहरिए भलेमानस, इस अदायगी के गवाह बनिये।"

रसीद फाड़कर खोजा नसरुद्दीन ने उसके दो टुकड़े कर डाले, फिर उन्हें मोड़कर चार टुकड़े कर डाले और हवा में उड़ा दिया। तब उसने अपना पटका खोलकर सूदखोर को वह सब रकम गिन दी जो उसने कुछ ही देर पहले हथियायी थी।

कुम्हार और उसकी बेटी खुशी और अचम्भे से और सूदखोर गुस्से से पत्थर की मूरत बन गये थे। गवाहों ने एक-दूसरे को आंख मारी और बदनाम सूदखोर की हार पर हंसने और खुश होने लगे।

खोजा नसरुद्दीन ने कान के पीछे से चेरी निकाली और सूदखोर को आंख मारकर उसे मुंह में रख लिया और होंठ चटखारने लगा।

सूदखोर का बदनुमा बदन धीरे-धीरे कांपने लगा। उसके हाथ हवा पकड़ने लगे। उसकी अच्छी वाली आंख गुस्से से बाहर को उभर

आयी। उसका कूबड़ कांपने लगा।

कुम्हार और गुलजान ने प्यार-भरी आवाज में कहा :"अजनबी! हमें अपना नाम बता दो ताकि हमें मालूम हो जाय कि हम किसके लिए दुआ करें।"

सूदखोर तुतलाया :"हां, मुझे अपना नाम बता दे, ताकि मुझे मालूम हो जाय कि किसके लिए बददुआ करूं।"

खोजा नसरुद्दीन का चेहरा चमक रहा था। उसने साफ और ऊंची आवाज में कहा :"बगदाद और तेहरान में, इस्ताम्बूल और बुखारा में, हर जगह में एक ही नाम से जाना जाता हूं और वह नाम है—खोजा नसरुद्दीन।"

सूदखोर डर के मारे सफेद पड़ गया और पीछे को हटता हुआ बोला: "खोजा नसरुद्दीन ?" और अपने कुली को आगे खदेड़ता हुआ

वह डर के मारे भागने लगा।

जहां तक और लोगों का ताल्लुक था, वे उसका इस्तकबाल करते हुए चिल्लाये—"खोजा नसरुद्दीन ! खोजा नसरुद्दीन !" नकाब के नीचे गुलजान की आखें चमक उठीं। बूढ़ा कुम्हार अभी तक अपने होश दुरस्त नहीं कर पाया था। वह हवा में हाथ हिलाता रहा और कुछ भिनभिनाता रहा।

... क्रमशः ...

*

आपके जवाब के इन्तजार में—शिवसिंह नयाल
'अलारिप्पु' बी-6/62, पहली मंजिल, सफदरजंग इन्क्लेव, नई दिल्ली-110029. दूरभाष : 609327
ज्योति लेजर टाइपसेटिंग
दिल्ली-110092